करुणा–सागर परमात्मा श्री जिनेश्वरदेव की

卐 स्नात्र पूजा की विधि 卐

1. तीन सुन्दर चौकी (बाजोट) पर सिंहासन रखना।
2. नीचे की चौकी पर बीच में केसर का स्वस्तिक करना, उसको अक्षत से भरना और उसके ऊपर नारियल स्थापित करना।
3. उसी चौकी पर किए हुए स्वस्तिक के आगे नये चार स्वस्तिक बनाना, उसके ऊपर चार कलश की स्थापना करना। कलशों के मुख पर नाडाछडी बाँधना, कलशों में पंचामृत (दूध, दही, घी, पानी, और शक्कर) भरना।
4. सिंहासन के मध्य भाग में केसर का स्वस्तिक करके उसको चाँवल से भरना, उस पर रुपा (चांदी) का धन रखना उस पर तीन नवकार मन्त्र का स्मरण करके पंच धातु की प्रतिमा स्थापित करना।
5. प्रतिमाजी के आगे दूसरा स्वस्तिक करके, उस पर श्री सिद्धचक्रजी स्थापन करना।
6. प्रतिमाजी की दाहिनी ओर प्रतिमाजी की नासिका तक ऊँचा घी का दीपक रखना।
7. स्नात्र पूजा में शामिल होने वालों के हाथ पर नाडाछड़ी बांधना, हाथों में पंचामृत से पूर्ण कलश देना, तीन नदकार मन्त्र का स्मरण करके भगवंत पर तथा सिद्धचक्रजी पर प्रक्षाल करना।
8. जल का प्रक्षाल करके तीन अंगलूंछन करना, बाद में केसर से पूजा करना।
9. हाथ को धोकर, दाहिने हाथ की हथेली पर केसर से स्वस्तिक करना और पहले कलश लेकर बाद में कुसुमांजलि का थाल लेकर खड़े रहना।

(कलश लेकर खड़ा रहना)

काव्यं (द्रुत विलंबित-वृत्तम्)

सरस शान्ति सुधारस सागरं,
शुचितरं गुणरत्न महागरं ।
भविक पंकज बोध दिवाकरं,
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं ॥1॥

॥ दोहा ॥

कुसुमाभरण उतारीने, पड़िमा धरिय विवेक ।
मज्जन पीठे स्थापीने, करीये जल अभिषेक ॥2॥

(प्रक्षाल करके अंगलूंछन कर दाहिने अंगूठे पर पूजा करना)

(गाथा-आर्या गीति)

जिण जम्म समए मेरु सिहरे, रयण कणय कलसेहिं ।
देवा सुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि ॥ 3 ॥

(कुसुमांजलि की थाली लेकर खड़ा रहना)

(कुसुमांजलि-ढाल)

निर्मल जल कलशे न्हवरावे,
वस्त्र अमूलक अंग धरावे ।
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा,
सिद्ध स्वरुपी अंग पखाली,
आतम निर्मल हुई सुकुमाली...कुसुमांजलि मेलो. ॥4॥

(दाहिने अंगूठे पर कुसुमांजलि रखना)

(गाथा-आर्या गीति)

मचकुंद - चंप - मालईं - कमलाईं पुप्फपंच वण्णाईं ।
जगनाह न्हवण समए, देवा - कुसुमांजलिं दिंती ॥5॥

(नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः)

(कुसुमांजलि-ढाल)

रयण सिंहासन जिन थापीजे,
कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजे ।
कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा ॥ 6॥

॥दोहा ॥

जिण तिहुँ कालय सिद्धनी, पडिमा गुण भंडार ।
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार ॥ 7 ॥

(नमोऽर्हत्.....)

(कुसुमांजलि - ढाल)

कृष्णागरु - वर धूप धरीजे,
सुगंध कर कुसुमांजलि दीजे ।
कुसुमांजलि मेलो नेमि-जिणंदा ॥ 8॥

(गाथा-आर्या गीति)

जसु परिमल बल दह दिसिं,
महुयर झंकार सद्द संगीया ।
जिण चलणो वरि मुक्का,
सुर नर कुसुमांजलि सिद्धा ॥9॥

(नमोऽर्हत्.....)

(कुसुमांजलि -ढाल)

पास जिणेसर जग जयकारी,
जल-थल फूल उदक कर धारी ।
कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥ 10 ॥

॥ दोहा ॥

मूके कुसुमांजलि सुरा, वीर चरण सुकुमाल ।
ते कुसुमांजलि भविकनां, पाप हरे त्रण काल ॥11॥

(नमोऽर्हत्....)

(कुसुमांजलि-ढाल)

विविध कुसुमवर जाति गहेवी,
जिन चरणे पणमंत ठवेवी,
कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥12॥

(वस्तु-छंद)

न्हवणकाले न्हवणकाले, देव - दाणव समुच्चिय ।
कुसुमांजलि तहिं संठविय, पसरंत दिसि परिमल सुगंधिय ।
जिणपयकमले निवडइं, विग्घहर जस नाम मंतो,
अनंत चउवीस जिन, वासव मलीय असेस,

सा कुसुमांजलि सुहकरो, चउविह संघ विशेष,
कुसुमांजलि मेलो चउवीस जिणंदा ॥ 13 ॥
(नमोऽर्हत्.....)

(कुसुमांजलि-ढाल)

अनंत चउवीसी जिनजी जुहारुं,
वर्तमान चउवीसी संभारुं,
कुसुमांजलि मेलो चोवीस जिणंदा ॥14॥

॥ दोहा ॥

महाविदेहे संप्रति, विहरमान जिन वीश।
भक्ति भरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश ॥15॥
(नमोऽर्हत्.....)

(कुसुमांजलि-ढाल)

अपच्छर मंडलि गीत उच्चारा,
श्री शुभवीर विजय जयकारा ।
कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा ॥16॥

॥ इति कुसुमांजलयः ॥

(तीन खमासमण, जगचिंतामणि के चैत्यवंदन से जयवीयराय तक कहना।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि - आए मत्थएण वंदामि ॥1॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि- आए मत्थएण वंदामि ॥2॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि- आए मत्थएण वंदामि ॥3॥

(दाहिना घुटना जमीन पर स्थापी, बाँया घुटना खड़ा रख दो हाथ जोड़कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूँ ? इच्छं

जग-चिंतामणि जग-नाह, जग गुरु, जग रक्खण। जग-बंधव जग-सत्थवाह, जग-भाव विअक्खण। अट्ठावय संठविय रुव, कम्मट्ठ विणासण। चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहय सासण। 1। कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि।

उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स नवसाहु गम्मइ। संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण। समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥2॥ जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि। उज्जिंत पहु नेमिजिणं, जयउ वीर सच्चउरि मंडण। भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुह - दुरिअ खंडण। अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि तीआणागय संपइअ वंदु जिण सव्वेवि ॥ 3 ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ। बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ 4 ॥ पनरस कोडि-सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना। छत्तीस सहस असिआइं, सासय बिंबाइं पणमामि ॥ 5 ॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिण - बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ 1 ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ 1 ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ 2 ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरिआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ 3 ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥4॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ 5 ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं ॥ धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ 6॥ अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥7॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं ॥ बुद्धाणं, बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ 8 ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह - मपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ 9 ॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ 10 ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ, तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ 1 ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि – आए मत्थएण वंदामि ॥ 1॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड विरयाणं ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर – विस–निन्नासं, मंगल–कल्लाण आवासं ॥ 1 ॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोगमारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ 2 ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ॥3॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय – वब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ 4॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥ 5 ॥ (फिर दोनों हाथ जोड कर मस्तक पर लगाकर)

जयवीयराय जगगुरु होउ मम तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठ –फल – सिद्धि ॥ 1 ॥
लोग – विरुद्धच्चाओ, गुरुजण – पूआ परत्थकरणं च।
सुहगुरु – जोगो तव्वयण – सेवणा आभवमखंडा ॥ 2॥

(दोनों हाथ कुछ नीचे उतारकर)

वारिज्जइ जइवि नियाण बंधणं वीयराय तुह समए।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ 3 ॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम करणेणं ॥ 4 ॥
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व – कल्याण कारणं।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ 5 ॥

(हाथ को धोकर, धूप देकर, कलश लेकर खड़ा रहना।)

-: अथ कलश :-

॥ दोहा ॥ सयल जिनेसर पाय नमी, कल्याणक विधि तास।
वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूगे आस ॥17॥

॥ ढाल ॥

समकित गुण ठाणे परिणम्या, वली व्रतधर संयम सुख रम्या। वीस स्थानक विधिए तप करी, ऐसी भाव–दया दिलमां धरी ।18। जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करुं शासनरसी। शुचि रस ढलते तिहां बांधता, तीर्थंकर नाम निकाचता ॥19॥ सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भव करी। च्यवी पन्नर क्षेत्रे अवतरे, मध्य खंडे पण राजवी कुले ॥20॥ पटराणी कुखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हंसलो। सुख शय्याये रजनी शेषे, उतरतां चौद सुपन देखे ॥ 21 ॥

(ढाल–स्वप्न की)

पहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइट्ठो।
त्रीजे केसरी सिंह, चोथे लक्ष्मी अबीह ॥ 22 ॥
पांचमे फूलनी माला, छट्ठे चन्द्र विशाला।
रवि रातो ध्वज म्होटो, पूरण कलश नहि छोटो ॥ 23 ॥
दशमे पद्म – सरोवर, अग्यारमे रत्नाकर।
भुवन विमान रत्नगंजी, अग्निशिखा धूमवर्जी ॥ 24 ॥
स्वप्न लही जइ रायने भाखे, राजा अर्थ प्रकाशे।
पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ 25॥

(वस्तु–छंद)

अवधि नाणे अवधि नाणे, ऊपना जिनराज,
जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजंतु सुखकार,
मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्म उदय परभात सुन्दर,
माता पण आनंदिया, जागती धर्म विधान,
जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान ॥ 26 ॥
शुभ लग्ने जिन जनमीया, नारकी मां सुख ज्योत।
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत ॥27॥

ढाल (कडखाकी देशी) सांभलो कलश जिन महोत्सवनो इहां, छप्पन कुमरी दिशि, विदिशि आवे तिहां,

माय सुत नमीय, आणंद अधिको धरे,
अष्ट संवर्त वायुथी कचरो हरे ॥ 28 ॥
वृष्टि - गंधोदके अष्ट कुमरी करे,
अष्ट कलशा भरी, अष्ट दर्पण धरे,
अष्ट - चामर धरे, अष्ट पंखा लही,
चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही ॥29॥
घर करी केलनां माय सुत लावती,
करण शुचि कर्म जल, कलशे न्हवरावती,
कुसुम पूजी, अलंकार पहेरावती,
राखड़ी बांधी जइ, शयने पधरावती ॥30॥
नमीय कहे माय तुज, बाल लीलावती,
मेरु रवि चन्द्र लगे, जीवजो जगपति,
स्वामी गुण गावती, निज घरे जावती,
तेणे समे इन्द्र-सिंहासन कंपती ॥31॥

ढाल (एकवीशा देशी)

जिन जन्म्याजी, जिण वेला जननी घरे,
तिण वेलाजी, इन्द्र सिंहासन थरहरे,
दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा,
दिशि नायकजी, सोहम ईशान बिहुँ तदा ॥ 32 ॥

(त्रोटक - छंद)

तदा चिंते इन्द्र मनमां, कोण अवसर ए बन्यो,
जिन जन्म अवधिनाणे जाणी, हर्ष आनंद उपन्यो।
सुघोष आदे घंट नादे, घोषणा सुर में करे,
सवि देवी देवा जन्म महोत्सवे,
आवजो सुर गिरिवरे ॥ 33 ॥ **(घंट बजाना)**

(ढाल)

एम सांभलीजी, सुरवर कोडी आवी मले,
जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु ऊपर चले,

सोहमपतिजी, बहु परिवारे आविया,
माय जिननेजी, वांदी प्रभु ने वधाविया ॥ 34 ॥
(प्रभु का चाँवल से सत्कार करना **(बधाना)**

(त्रोटक)

वधावी बोले हे रत्नकुक्षी - धारिणी तुज सुत तणो,
हुं शक्र सोहम नामे करशुं, जन्म महोत्सव अति घणो,
एम कही जिन प्रतिबिंब स्थापी, पंच रुपे प्रभु ग्रही,
देव देवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही ॥35॥

(ढाल)

मेरु ऊपरजी, पाँडुक वन में चिहुं दिशे,
शिला ऊपरजी, सिंहासन मन उल्लसे,
तिहां बेसीजी, शक्रे जिन खोले धर्या,
हरि त्रेसठजी, बीजा तिहां आवी मल्या ॥36॥

(त्रोटक)

मल्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कलश अड जातिना,
मागधादि जल तीर्थ औषधि, धूप वलि बहु भाँतिना,
अच्युतपतिए हुकम कीनो, सांभलो देवा सवे,
क्षीर जलधि गंगा-नीर लावो, झटिति श्री जिन महोत्सवे ॥37॥

ढाल (विवाहला की देशी)

सुर सांभलीने संचरिया, मागध वरदामे चलीया,
पद्मद्रह गंगा आवे, निर्मल जल कलशा भरावे ॥ 38 ॥
तीरथ जल औषधि लेता, वली क्षीर समुद्रे जाता ।
जल कलशा बहुल भरावे, फूल चंगेरी थाला लावे ॥39॥
सिंहासन चामर धारी, धूपधाणा रकेबी सारी,
सिद्धांते भाख्या जेह, उपकरण मिलावे तेह ॥ 40 ॥
ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनन्द पावे,
कलशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे ॥41॥

ढाल (राग-धनाश्री)

आतम भक्ति मल्या केई देवा, केता मित्तनु जाई,
नारी प्रेर्या वली निज कुलवट, धर्मी धर्म सखाई,

जोइस व्यंतर भुवनपतिना, वैमानिक सुर आवे,
अच्युतपति हुकमे धरी कलशा, अरिहाने नवरावे ॥ 42 ॥
अडजाति कलशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो,
चउसठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसें गुणाकरी जाणो,
साठ लाख ऊपर एक कोडी, कलशानो अधिकार,
बासठ इन्द्रतणा तिहां बासठ, लोकपालना चार ॥ आतम. ॥ 43 ॥
चन्द्रनी पंक्ति छासठ छासठ, रविश्रेणि नर लोको,
गुरुस्थानक सुर केरो एकज, सामानिकनो एको,
सोहमपति ईशानपतिनी, इन्द्राणीना सोल,
असुरनी दश इन्द्राणी, नागनी बार करे कल्लोल ॥ आ. ॥44॥
ज्योतिष व्यंतर इन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको ।
कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको ।
परचूरण सुरनो एक छेल्लो, एक अढीसें अभिषेको,
ईशान इन्द्र कहे मुज आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको ॥ आ. ॥ 45॥
तव तस खोले ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरंगे,
वृषभ - रुप करी शृंग जले भरी, न्हवण करे प्रभु अंगे ।
पुष्पादिक पूजीने छांटे, करी केसर रंग-रोले,
मंगल दीवो आरती करतॉं, सुरवर जय जय बोले ॥ आ. ॥46॥
भेरी भुंगल ताल बजावत, वलिया जिन करधारी,
जननी घर माताने सोंपी, एणि परे वचन उच्चारी ।
पुत्र तुमारो स्वामी हमारो, अम सेवक आधार,
पंच धावी रंभादिक थापी, प्रभु खेलावणहार ॥ आतम. ॥47॥
बत्तीस कोडी कनक-मणि माणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे,
पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नंदीसर जावे ।
करीय अट्ठाइ उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे,
दीक्षा केवलने अभिलाषे, नित नित जिन गुण गावे ॥आ. ॥48॥
तपगच्छ ईसर सिंह - सूरीसर, केरा शिष्य बडेरा,
सत्यविजय पंन्यास तणे पद, कपूर विजय गंभीरा ।

खिमा विजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया,
पंडित वीरविजय तस शिष्ये,
जिन जन्म महोत्सव गाया ॥ आतम. ॥ 49 ॥
उत्कृष्टा एक सो ने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश,
अतीत अनागत काले अनंता तीर्थंकर जगदीश ।
साधारण ए कलश जे गावे, श्री शुभवीर सवाई,
मंगल लीला सुखभर पावे, घर घर हर्ष बधाई ॥ आतम.॥ 50 ॥
(अभिषेक करके अष्टप्रकारी पूजा करना)

पंडित श्री वीरविजयजी महाराज कृत

अष्टप्रकारी पूजा के दोहे

१. जल पूजा

जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश ।
जल पूजा फल मुज हजो, मांगो एम प्रभु पास ।।
ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर ।
श्री जिन ने नवरावतां, कर्म होय चकचूर ।। १ ।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

२. चन्दन पूजा

शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग ।
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग।। २।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ।

३. पुष्प पूजा

सुरभि अखण्ड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप ।
सुम जंतु भव्यज परे, करिये समकित छाप ।। ३।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

४. धूप पूजा

ध्यान घटा प्रगटाविये, वाम नयन जिन धूप ।
मिच्छत दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप ।। ४।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

५. दीपक पूजा

द्रव्य दीप सुविवेक थी, करतां दुःख होय फोक ।
भाव प्रदीप प्रगट हुवे, भासित लोकालोक ।। ५।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

६. अक्षत पूजा

शुद्ध अखण्ड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल ।
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल ।। ६।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

७. नैवेद्य पूजा

अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइअ अणंत ।
दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिवसंत ।। ७।।

मन्त्र- ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

८. फल पूजा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग ।
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवफल त्याग ।। ८।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

*** अष्टप्रकारी पूजा समाप्त ***

अष्टप्रकारी पूजा करके लूण उतारने के बाद आरती तथा मंगल दीवा करना ।

लूण उतारने के दोहे

लूण उतारो जिनवर अंगे,
निर्मल जलधारा मन रंगे ।। लूण०।। १ ।।
जिम जिम तड-तड लूण ज फूटे,
तिम-तिम अशुभ कर्मबंध तूटे ।। लूण०।। २।।
नयन सलूणां श्री जिनजीनां,
अनुपम रुप दया रस भीनां ।। लूण० ।। ३।।
रुप सलूणुं जिनजीनुं दीसे,
लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ।। लूण० ।। ४।।

त्रण प्रदक्षिणा देइ जलधारा,
जलण खेपवीये लूण उदारा ।। लूण० ।। ५ ।।
जे जिन ऊपर दुमणो प्राणी,
ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ।। लूण० ।। ६ ।।
अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे,
धूप करीजे विविध प्रबन्धे ।। लूण० ।। ७ ।।

श्री आदिजिन की आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा,
नाभिराया मरुदेवी के नंदा ।। जय० ।। १।।
पहली आरती पूजा कीजे,
नर भव पामीने लाहो लीजे।। जय० ।। २।।
दूसरी आरती दीन दयाला,
धुलेवा मंडपमां जग अजवाला।। जय०।। ३।।
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा,
सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा।। जय०।। ४ ।।
चौथी आरती चउगति चूरे,
मनवांछित फल शिवसुख पूरे।। जय०।। ५।।
पंचमी आरती पुन्य उपाया,
मूलचन्द ऋषभ गुण गाया।। जय०।। ६ ।।

श्री मंगल दीवो

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती उतारीने बहु चिरंजीवो।। दी०।। १।।
सोहामणुं घेर पर्व दीवाली,
अंबर खेले अमरा बाली ।। दी०।। २।।

दीपाल भणे एणे कुल अजवाली,
भावे भगते विघन निवारी ।। दी०।। ३।।
दीपाल भणे एणे ए कलिकाले,
आरती उतारी राजा कुमारपाले।। दी०।।४।।
अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विध संघ ने हो जो।। दी०।। ५।।

* श्री शांति कलश *

एक कुण्डी लेकर उसमें कंकु से साथिया करना। उसमें चाँदी का सिक्का रखना। शांति कलश करने वाले को कंकु से तिलक करना, चाँवल लगाना और गले में पुष्पमाला डालना। शांति कलश करने वाला प्रभुजी को अक्षत से बधावे।

शांतिकलश करने वाले के हाथ में कंकु का साथिया करना। ऊपर कलश रखना। शांति कलश करने वाला तीन नवकार मन्त्र गिनकर कलश की धार शुरु करे।

नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

अथ बृहद् (बड़ी) शांति

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवता मर्हदादिप्रभावा-दारोग्य-श्री धृति-मतिकरी क्लेशविध्वंस हेतुः॥ 1॥

भो ! भो ! भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद् भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रि शृङ्गे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा ॥ ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पंथाः। इति भव्यजनैः

सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवंतोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूज्या - स्त्रिलोकेश्वराः-स्त्रिलोकोद्योतकराः।

ॐ ऋषभ-अजित-संभव अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चंद्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपुज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शांति-कुंथु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानांता जिनाः शांताः शांतिकरा भवन्तु स्वाहा॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरारिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-मति-कीर्ति-कांति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः॥

ॐ रोहिणी - प्रज्ञप्ति - वज्रशृंखला - वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा महाज्वाला - मानवी - वैरोट्या - अच्छुप्ता - मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥

ॐ आचार्योपाध्याय प्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण-संघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहुकेतु सहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कंदविनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगर क्षेत्रदेवता दयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां, अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-संबंधि-बंधुवर्ग-सहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डलायतन-निवासि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टि ऋद्धिवृद्धिमांगल्योत्सवाः सदा-प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश - मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ 1 ॥
शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिंदिशतु मे गुरुः।
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ 2 ॥

उन्मृष्ट - रिष्ट - दुष्ट - ग्रहगति - दुःस्वप्न - दुर्निमित्तादि। संपादितहित संपन्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ 3 ॥ श्रीसंघजगज्जनपद - राजाधिपराजसन्निवेशानां । गौष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ 4 ॥

श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥ श्री जनपदानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्री राजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्री गोष्ठिकानां शांतिर्भवतु ॥ श्री पौरमुख्याणां शांतिर्भवतु ॥ श्री पौरजनस्य शांतिर्भवतु ॥ श्री ब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा॥

एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांति कलशं गृहीत्वा, कुंकुमचंदनकर्पूरागरूधूपवास कुसुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा, शांतिपानीयं - मस्तके - दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायंति च मंगलानि॥

स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्,
कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥1॥
शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥
अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवंतु स्वाहा ॥
उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणं ।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥

फिर स्नात्रीयाओ द्वारा तीन खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? इच्छं कहकर चैत्यवंदन करना।

✻ अथ चैत्यवंदन विधि ✻

(प्रथम तीन खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि - आए मत्थएण वंदामि ॥1॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि- आए मत्थएण वंदामि ॥2॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहि- आए मत्थएण वंदामि ॥3॥

(दाहिना घुटना जमीन पर स्थापी, बाँया घुटना खड़ा रख दो हाथ जोड़कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूँ ? इच्छं

सकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त मेघो,
दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजल निधि पोतः सर्व सम्पत्ति हेतु :,
स भवतु सततं व : श्रेयसे शांतिनाथः, श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ।
अष्ट कर्म- रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी ॥
प्रभु नामे आनन्द कंद, सुख सम्पत्ति लहीए ।
प्रभु नामे भव भव तणां, पातक सब दहीए ॥
ॐ ह्रीं वर्ण जोड़ी करी, जपीए पार्श्व नाम ।
विष अमृत थई परिणमे, लहीए अविचल ठाम ॥
जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥1॥

(नमुत्थुणं से शुरु करके जावंत केविसाहु तक बोलना। *फिर उवसग्गहरं अथवा स्तवन बोलना, उसके बाद जय-वीयराय कहना*) फिर खड़े होकर,

अरिहंत चेइआणं करेमि काउसग्गं वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउसग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

अब प्रतिमाकार खड़े होकर मन में एक नवकार का काउसग्ग करना, वह निम्न प्रकार है

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(काउसग्ग कर नीचे प्रमाणे नमोऽर्हत् कहकर एक थोय कहना)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

॥ थोय ॥

पास जिणंदा वामानंदा, जब गरभे फली।
सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली॥
जिनवर जाया, सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये।
नेमि राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीए॥

(फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि।

*** चैत्यवंदन विधि समाप्त ***

* सुबह के पच्चक्खाण *

1. नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअं

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं, मुट्ठिसहिअं **पच्चक्खाइ** चउव्विहंपि आहारं - असणं - पाणं - खाइमं - साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं **वोसिरइ.**

पच्चक्खाण अपने लिये करना हो तो पच्चक्खाइ की जगह ''पच्चक्खामि'' और वोसिरइ की जगह ''वोसिरामि'' बोलना।

2. पोरिसि - साड्ढपोरिसि.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

3. पुरिमुड्ढ-अवड्ढ.

सूरे उग्गए पुरिमुड्ढं, अवड्ढं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहार असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

4. एकासणा-बियासणा का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे-नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं-पाणं - खाइमं - साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठा-वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं **बियासणं** पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिआगारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

(अगर एकासणा करना हो तो बियासणं की जगह एकासणं कहना)

5. आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे - नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिआगारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा वोसिरइ।

तिविहार उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहंपि, आहारं–असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं– सहसागारेणं पारिट्ठावणिया – गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ.

चउव्विहार उपवास–सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ– चउव्विहंपि आहारं असणं–पाणं–खाइमं–साइमं– अन्नत्थणा– भोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

अभिग्रह–अभिग्रहं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

* शाम के पच्चक्खाण *

1. **पाणहार**–पाणहार दिवसचरिमं, पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

2. **चउव्विहार**– दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

3. **तिविहार** : दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

4.चौदह नियम लेने का देसावगासिक का पच्चक्खाण

देसावगासियं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभागेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.